27-02-2024

BREAKING NEWS
UNITED INDIA NEWS
Channel
पुर फिजी से गन्ना उत्पादक परिषद के महाप्रबंधक संचालन सुनील चौधरी के नेतृत्व में प्रगति
हमारे चैनल को लाइक करें शेयर करें सबस्क्राइब करें।

BREAKING NEWS
UNITED INDIA NEWS
Channel
कानपुर
हमारे चैनल को लाइक करें शेयर करें सबस्क्राइब करें।

BREAKING NEWS
UNITED INDIA NEWS
Channel
निधिमंडल
हमारे चैनल को लाइक करें शेयर करें सबस्क्राइब करें।

Fiji farmers arrive at NSI on study tour

PIONEER NEWS SERVICE ■ KANPUR

An 18-member delegation of progressive sugarcane farmers led by Sunil Chaudhary, General Manager (Operations), Sugarcane Grower Council from Fiji arrived at the National Sugar Institute (NSI) on their two-week study tour to see and discuss latest efficient techniques adopted in India for sugarcane cultivation and sugar production. The team will stay at NSI for a few days to view the farm, experimental sugar factory and ethanol plant operations with respect to innovative measures taken to improve the productivity from farm to factory.

The visit has been organised by the institute on the request of Sugarcane Grower Council, Fiji, through Ministry of External Affairs, Government of India. Sugarcane is one of the most significant crops cultivated in Fiji and for over a century has shaped the development of the country's economy. However, for the past 20 years, both sugarcane and sugar production has declined steadily, by approximately 50 per cent. Decreasing profits from sugarcane production due to lower productivity coupled with cultivation, harvesting and transportation costs and the non-renewal of land leases, have all led to the present situation said Director Prof Narendra Mohan. He said we are going to showcase them the work done by the Indian farmers, institutes and industry for making the sugar industry sustainable. We are going to provide them theoretical and practical exposure on varietal development, seed treatment, planting techniques, irrigation practices, disease and pest management, farm mechanisation and importantly about the use of Information Technology on harvesting the sugarcane at optimum maturity and minimising cut to crush delay. The director informed that exposure will also be given to them about the latest trend in processing to produce superior quality sugar and utilisation of by-products for making value-added products.

After the ceremonial welcome and address of Prof Mohan, Director, presentation about the institute activities was given by Prof D Swain, Professor Sugar Engineering. Dr Seema Paroha, Prof Biochemistry and Dr Ashok Kumar, Assistant Prof. Agriculture Chemistry conducted interactive sessions on sugar-ethanol scenario and on various aspects of sugarcane farming respectively.

After completing exposure visit of NSI its experts will accompany the delegation to various commercial sugar factories, institute involved in developing new sugarcane varieties and to the works of machinery manufacturers. The delegation will also interact with the Indian progressive farmers to know the ground realities with respect to measures taken for improving the crop yield with minimum inputs of irrigation water, fertilisers, insecticides and pesticides.(

DT दीनार टाइम्स | कानपुर न्यूज़

फिजी का 18 सदस्य दल एन एसआई कैंपस पहुंचा

एनएसआई फिजी शुगर इंडस्ट्री की माली हालत सुधरेगा

डीटीएनएन । कानपुर

फिजी से गन्ना उत्पादक परिषद के महाप्रबंधक (संचालन) सुनील चौधरी के नेतृत्व में प्रगतिशील गन्ना किसानों का 18 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल भारत में गन्ने के उत्पादन के लिए अपनाई जाने वाली नवीनतम कुशल तकनीकों को देखने और चर्चा करने के लिए अपने दो सप्ताह के अध्ययन दौरे पर राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर पहुंचा। खेती और चीनी उत्पादन यानी खेत से कारखाने तक उत्पादकता में सुधार के लिए उठाए गए नवीन उपायों के संबंध में संस्थान के फार्म, प्रायोगिक चीनी कारखाने और इथेनॉल संयंत्र के संचालन को देखने के लिए टीम कुछ दिनों के लिए राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर में रुकेगी।

यह यात्रा भारत सरकार के विदेश मंत्रालय के माध्यम से गन्ना उत्पादक परिषद, फिजी के अनुरोध पर संस्थान द्वारा आयोजित की गई है। गन्ना फिजी में खेती की जाने वाली सबसे महत्वपूर्ण फसलों में से एक है और एक सदी से भी अधिक समय से इसने देश की अर्थव्यवस्था के विकास को आकार दिया है। हालांकि, पिछले 20 वर्षों से, गन्ना और चीनी दोनों के उत्पादन में लगातार लगभग 50ल की गिरावट आई है। निदेशक प्रोफेसर नरेंद्र मोहन ने कहा कि खेती, कटाई और परिवहन लागत के साथ-साथ कम उत्पादकता और भूमि पट्टों के नवीनीकरण न होने के कारण गन्ने के उत्पादन में कमी के कारण फिजी में वर्तमान स्थिति पैदा हुई है।

हम उन्हें चीनी उद्योग को टिकाऊ बनाने के लिए भारतीय किसानों, संस्थानों और उद्योग द्वारा किए गए कार्यों को दिखाने जा रहे हैं। हम उन्हें विभिन्न प्रकार के विकास, बीज उपचार, रोपण तकनीक, सिंचाई प्रथाओं, रोग और कीट प्रबंधन, कृषि मशीनीकरण पर सैद्धांतिक और व्यावहारिक जानकारी प्रदान करने जा रहे हैं और महत्वपूर्ण रूप से उचित परिपक्वता पर गन्ने की कटाई और पेराई देरी में कटौती को कम करने के बारे में सूचना प्रौद्योगिकी के उपयोग पर जानकारी प्रदान करेंगे। निदेशक ने बताया कि बेहतर गुणवत्ता वाली चीनी का उत्पादन करने के लिए प्रसंस्करण में नवीनतम तकनीक और मूल्य वर्धित उत्पाद बनाने के लिए सह-उत्पादों के उपयोग के बारे में भी उन्हें जानकारी दी जाएगी।औपचारिक स्वागत और निदेशक प्रोफेसर मोहन के संबोधन के बाद, प्रोफेसर डी. स्वैन, प्रोफेसर शुगर इंजीनियरिंग द्वारा संस्थान की गतिविधियों के बारे में प्रस्तुति दी गई। डॉ. सीमा परोहा, प्रोफेसर बायोकैमिस्ट्री और डॉ. अशोक कुमार, सहायक प्रोफेसर, कृषि रसायन विज्ञान ने क्रमशः चीनीइथेनॉल परिदृश्य और गन्ने की खेती के विभिन्न पहलुओं पर इंटरैक्टिव सत्र आयोजित किए राष्ट्रीय शर्करा संस्थान का एक्सपोजर दौरा पूरा करने के बाद, संस्थान के विशेषज्ञ प्रतिनिधिमंडल के साथ विभिन्न वाणिज्यिक चीनी कारखानों, नई गन्ना किस्मों के विकास में शामिल संस्थानों, मशीनरी निर्माताओं का दौरा करेंगे। प्रतिनिधिमंडल सिंचाई के पानी, उर्वरकों और कीटनाशकों के न्यूनतम इनपुट के साथ फसल की उपज में सुधार के लिए किए गए उपायों के संबंध में जमीनी हकीकत जानने के लिए भारतीय प्रगतिशील किसानों के साथ भी बातचीत करेगा।

गन्ने की पैदावार और तकनीकी गुर सीखेंगा फिजी का प्रतिनिधि मंडल

वार्ता करते निदेशक प्रो. नरेन्द्र मोहन व फिजी का प्रतिनिधि मंडल।

● अयोध्या में श्रीराम का भव्य मंदिर के दर्शन करेंगे फिजी से आये सदस्य

कानपुर, 26 फरवरी। फिजी से गन्ना उत्पादक परिषद के महाप्रबंधक सुनील चौधरी के नेतृत्व में प्रतिशील गन्ना किसानों का 18 सदस्यीय प्रतिनिधि मंडल भारत में गन्ने केउत्पादन के लिए अपनाई जाने वाली नवीनतम कुशल तकनीकों को देखने और चर्चा के लिए दो सप्ताह के अध्ययन दौर पर राष्टीय शर्करा संस्थान पहुंचा। गन्न की खेती और चीनी उत्पादक यानी खेत से कारखाने तक उत्पादकता और सुधार के लिए उठाये गये नवीन उपायों के संबध में संस्थान के फार्म, प्रायोगिक चीनी कारखाने और इथेनाल संयंत्र के संचालन को देखने के लिए टीम कुछ दिनों के लिए राष्टीय शर्करा संस्थान में ठहरेगी। वहीं फिजी से आये प्रतिनिधि मंडल अयोध्या में श्रीराम की भव्य मंदिर भी जाएंगे। निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने बताया कि फिजी की इकोनामी शुगर निर्यात पर टिकी है और वहां तीन चीनी मिले भी संचालित है। लेकिन वहां गन्ने की पैदावार 50 टन प्रति हेक्टेयर है, जबकि भारत में 80 टन प्रति हेक्टेअर है। यहां से गन्ने से शुगर का प्रतिशत भी एक कम है। उन्होंने बताया कि अब चीनी मिलों को आधुनिक उपकरणों के साथ ही कम लागत में चीनी की पैदावार बढ़ाने के बारे में जानकारी दी जाएगी। प्रतिनिधि मंडल को वाणिज्यक चीनी कारखाने, नई गन्ना किस्मे के विकास, मशीनरी निर्माताओं का दौरा करेंगे। प्रतिनिधि मंडल सिचाई के लिए पानी, उर्वरकों और कीटनाशकों के न्यूनतम इनपुट के साथ फसल सुधार के लिए किये गये उपायो के संबंध में जमीनी हकीकत जानने के लिए भारतीय प्रगतिशील किसान के साथ बीतचीत भी करेंगे। वार्ता के दौरान फिजी से आये विजय सिंह, गजेंद्र सिंह, प्रमिला देवी, अनीश नारायण आदि मौजूद रहे।

18 सदस्यीय प्रतिमंडल राष्ट्रीय शर्करा संस्थान पहुंची

दैनिक देश मोर्चा संवाददाता
मनी वर्मा

कानपुर-फिजी से गन्ना उत्पादक परिषद के महाप्रबंधक (संचालन) सुनील चौधरी के नेतृत्व में प्रगतिशील गन्ना किसानों का 18 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल भारत में गन्ने के उत्पादन के लिए अपनाई जाने वाली नवीनतम कुशल तकनीकों को देखने और चर्चा करने के लिए अपने दो सप्ताह के अध्ययन दौरे पर राष्ट्रीय शर्करा संस्थान कानपुर पहुंचा खेती और चीनी उत्पादन यानी खेत से कारखाने तक उत्पादकता में सुधार के लिए उठाए गए नवीन उपायों के संबंध में संस्थान के फार्म, प्रायोगिक चीनी कारखाने और इथेनॉल संयंत्र के संचालन को देखने के लिए टीम कुछ दिनों के लिए राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर में रुकेगी यह यात्रा भारत सरकार के विदेश मंत्रालय के माध्यम से गन्ना उत्पादक परिषद, फिजी के अनुरोध पर संस्थान द्वारा आयोजित की गई है गन्ना फिजी में खेती की जाने वाली सबसे महत्वपूर्ण फसलों में से एक है और एक सदी से भी अधिक समय से इसने देश की अर्थव्यवस्था के विकास को आकार दिया है हालांकि, पिछले 20 वर्षों से गन्ना और चीनी दोनों के उत्पादन में लगातार लगभग 50% की गिरावट आई है निदेशक प्रोफेसर नरेंद्र मोहन ने कहा कि खेती, कटाई और परिवहन लागत के साथ-साथ कम उत्पादकता और भूमि पट्टों के नवीनीकरण न होने के कारण गन्ने के उत्पादन में कमी के कारण फिजी में वर्तमान स्थिति पैदा हुई है हम उन्हें चीनी उद्योग को टिकाऊ बनाने के लिए भारतीय किसानों, संस्थानों और उद्योग द्वारा किए गए कार्यों को दिखाने जा रहे हैं हम उन्हें विभिन्न प्रकार के विकास, बीज उपचार, रोपण तकनीक, सिंचाई प्रथाओं, रोग और कीट प्रबंधन, कृषि मशीनीकरण पर सैद्धांतिक और व्यावहारिक जानकारी प्रदान करने जा रहे हैं और महत्वपूर्ण रूप से उचित परिपक्वता पर गन्ने की कटाई और पेराई देरी में कटौती को कम करने के बारे में सूचना प्रौद्योगिकी के उपयोग पर जानकारी प्रदान करेंगे निदेशक ने बताया कि बेहतर गुणवत्ता वाली चीनी का उत्पादन करने के लिए प्रसंस्करण में नवीनतम तकनीक और मूल्य वर्धित उत्पाद बनाने के लिए सह-उत्पादों के उपयोग के बारे में भी उन्हें जानकारी दी जाएगी औपचारिक स्वागत और निदेशक प्रोफेसर मोहन के संबोधन के बाद, प्रोफेसर डी. स्वैन, प्रोफेसर शुगर इंजीनियरिंग द्वारा संस्थान की गतिविधियों के बारे में प्रस्तुति दी गई डॉ. सीमा परोहा, प्रोफेसर बायोकेमिस्ट्री और डॉ. अशोक कुमार, सहायक प्रोफेसर, कृषि रसायन विज्ञान ने क्रमशः चीनी-इथेनॉल परिदृश्य और गन्ने की खेती के विभिन्न पहलुओं पर इंटरैक्टिव सत्र आयोजित किए राष्ट्रीय शर्करा संस्थान का एक्सपोजर दौरा पूरा करने के बाद, संस्थान के विशेषज्ञ प्रतिनिधिमंडल के साथ विभिन्न वाणिज्यिक चीनी कारखानों, नई गन्ना किस्मों के विकास में शामिल संस्थानों, मशीनरी निर्माताओं का दौरा करेंगे प्रतिनिधि मंडल सिंचाई के पानी, उर्वरकों और कीटनाशकों के न्यूनतम इनपुट के साथ फसल की उपज में सुधार के लिए किए गए उपायों के संबंध में जमीनी हकीकत जानने के लिए भारतीय प्रगतिशील किसानों के साथ भी बातचीत करेगा

फिजी की 18 सदस्य टीम पहुंची शर्करा संस्थान, कार्यशाला में लेंगे भाग

नगराज दर्पण समाचार

कानपुर। फिजी से गन्ना उत्पादक परिषद के महाप्रबंधक (संचालन) सुनील चौधरी के नेतृत्व में प्रगतिशील गन्ना किसानों का 18 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल भारत में गन्ने के उत्पादन के लिए अपनाई जाने वाली नवीनतम कुशल तकनीकों को देखने और चर्चा करने के लिए अपने दो सप्ताह के अध्ययन दौरे पर राष्ट्रीय शर्करा संस्थान पहुंचा। खेती और चीनी उत्पादन यानी खेत से कारखाने तक उत्पादकता में सुधार के लिए उठाए गए नवीन उपायों के संबंध में संस्थान के फार्म, प्रायोगिक चीनी कारखाने और इथेनॉल संयंत्र के संचालन को देखने के लिए टीम कुछ दिनों के लिए राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में रुकेगी। यह यात्रा भारत सरकार के विदेश मंत्रालय के माध्यम से गन्ना उत्पादक परिषद, फिजी के अनुरोध पर संस्थान द्वारा आयोजित की गई है। गन्ना फिजी में खेती की जाने वाली सबसे महत्वपूर्ण फसलों में से एक है और एक सदी से भी अधिक समय से इसने देश की अर्थव्यवस्था के विकास को आकार दिया है। हालाँकि, पिछले 20 वर्षों से, गन्ना और चीनी दोनों के उत्पादन में लगातार लगभग 50त्न की गिरावट आई है।

निदेशक प्रोफेसर नरेंद्र मोहन ने कहा कि खेती, कटाई और परिवहन लागत के साथ-साथ कम उत्पादकता और भूमि पट्टों के नवीनीकरण न होने के कारण गन्ने के उत्पादन में कमी के कारण फिजी मे वर्तमान स्थिति पैदा हुई है औपचारिक स्वागत और निदेशक प्रोफेसर मोहन के संबोधन के बाद, प्रोफेसर डी. स्वैन, प्रोफेसर शुगर इंजीनियरिंग द्वारा संस्थान की गतिविधियों के बारे में प्रस्तुति दी गई। डॉ. सीमा परोहा, प्रोफेसर बायोकैमिस्ट्री और डॉ. अशोक कुमार, सहायक प्रोफेसर, कृषि रसायन विज्ञान ने क्रमशः चीनी-इथेनॉल परिदृश्य और गन्ने की खेती के विभिन्न पहलुओं पर इंटरैक्टिव सत्र आयोजित किए। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान का एक्सपोजर दौरा पूरा करने के बाद, संस्थान के विशेषज्ञ प्रतिनिधिमंडल के साथ विभिन्न वाणिज्यिक चीनी कारखानों, नई गन्ना किस्मों के विकास में शामिल संस्थानों, मशीनरी निर्माताओं का दौरा करेंगे। प्रतिनिधिमंडल सिंचाई के पानी, उर्वरकों और कीटनाशकों के न्यूनतम इनपुट के साथ फसल की उपज में सुधार के लिए किए गए उपायों के संबंध में जमीनी हकीकत जानने के लिए भारतीय प्रगतिशील किसानों के साथ भी बातचीत करेगा।

फिजी के गन्ना उत्पादक राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में जानेंगे नई तकनीकी

कानपुर (नगर छाया समाचार)। फिजी से गन्ना उत्पादक परिषद के महाप्रबंधक (संचालन) सुनील चौधरी के नेतृत्व में प्रगतिशील गन्ना किसानों का 18 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल भारत में गन्ने के उत्पादन के लिए अपनाई जाने वाली नवीनतम कुशल तकनीकों को देखने और चर्चा करने के लिए अपने दो सप्ताह के अध्ययन दौरे पर राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर पहुचा। खेती और चीनी उत्पादन यानी खेत से कारखाने तक उत्पादकता में सुधार के लिए उठाए गए। नवीन उपायों के संबंध में संस्थान के फार्म, प्रायोगिक चीनी कारखाने और इथेनॉल संयंत्र के संचालन को देखने के लिए टीम कुछ दिनों के लिए राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर में रुकेगी।

यह यात्रा भारत सरकार के विदेश मंत्रालय के माध्यम से गन्ना उत्पादक परिषद, फिजी के अनुरोध पर संस्थान द्वारा आयोजित की गई है। गन्ना फिजी में खेती की जाने वाली सबसे महत्वपूर्ण फसलों में से एक है और एक सदी से भी अधिक समय से इसने देश की अर्थव्यवस्था के विकास को आकार दिया है। हालाँकि, पिछले 20 वर्षों से, गन्ना और चीनी दोनों के उत्पादन में लगातार लगभग 50त्न की गिरावट आई है। निदेशक प्रोफेसर नरेंद्र मोहन ने कहा कि खेती, कटाई और परिवहन लागत के साथ-साथ कम उत्पादकता और भूमि पट्टों के नवीनीकरण न होने के कारण गन्ने के उत्पादन में कमी के कारण फिजी मे वर्तमान स्थिति पैदा हुई है।

हम उन्हें चीनी उद्योग को टिकाऊ बनाने के लिए भारतीय किसानों, संस्थानों और उद्योग द्वारा किए गए कार्यों को दिखाने जा रहे हैं। हम उन्हें विभिन्न प्रकार के विकास, बीज उपचार, रोपण तकनीक, सिंचाई प्रथाओं, रोग और कीट प्रबंधन, कृषि मशीनीकरण पर सैद्धांतिक और व्यावहारिक जानकारी प्रदान करने जा रहे हैं और महत्वपूर्ण रूप से उचित परिपक्वता पर गन्ने की कटाई और पेराई देरी में कटौती को कम करने के बारे में सूचना प्रौद्योगिकी के उपयोग पर जानकारी प्रदान करेंगे। निदेशक ने बताया कि बेहतर गुणवत्ता वाली चीनी का उत्पादन करने के लिए प्रसंस्करण में नवीनतम तकनीक और मूल्य वर्धित उत्पाद बनाने के लिए सह-उत्पादों के उपयोग के बारे में भी उन्हें जानकारी दी जाएगी।

औपचारिक स्वागत और निदेशक प्रोफेसर मोहन के संबोधन के बाद, प्रोफेसर डी. स्वैन, प्रोफेसर शुगर इंजीनियरिंग द्वारा संस्थान की गतिविधियों के बारे में प्रस्तुति दी गई। डॉ. सीमा परोहा, प्रोफेसर बायोकैमिस्ट्री और डॉ. अशोक कुमार, सहायक प्रोफेसर, कृषि रसायन विज्ञान ने क्रमशः चीनी-इथेनॉल परिदृश्य और गन्ने की खेती के विभिन्न पहलुओं पर इंटरैक्टिव सत्र आयोजित किए।

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान का एक्सपोजर दौरा पूरा करने के बाद, संस्थान के विशेषज्ञ प्रतिनिधिमंडल के साथ विभिन्न वाणिज्यिक चीनी कारखानों, नई गन्ना किस्मों के विकास में शामिल संस्थानों, मशीनरी निर्माताओं का दौरा करेंगे। प्रतिनिधिमंडल सिंचाई के पानी, उर्वरकों और कीटनाशकों के न्यूनतम इनपुट के साथ फसल की उपज में सुधार के लिए किए गए उपायों के संबंध में जमीनी हकीकत जानने के लिए भारतीय प्रगतिशील किसानों के साथ बातचीत भी करेगा।

फिजी के गन्ना उत्पादक राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में जानेंगे नई तकनीकी

कानपुर (नगर छाया समाचार)। फिजी से गन्ना उत्पादक परिषद के महाप्रबंधक (संचालन) सुनील चौधरी के नेतृत्व में प्रगतिशील गन्ना किसानों का 18 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल भारत में गन्ने के उत्पादन के लिए अपनाई जाने वाली नवीनतम कुशल तकनीकों को देखने और चर्चा करने के लिए अपने दो सप्ताह के अध्ययन दौरे पर राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर पहुचा। खेती और चीनी उत्पादन यानी खेत से कारखाने तक उत्पादकता में सुधार के लिए उठाए गए। नवीन उपायों के संबंध में संस्थान के फार्म, प्रायोगिक चीनी कारखाने और इथेनॉल संयंत्र के संचालन को देखने के लिए टीम कुछ दिनों के लिए राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर में रुकेगी।

यह यात्रा भारत सरकार के विदेश मंत्रालय के माध्यम से गन्ना उत्पादक परिषद, फिजी के अनुरोध पर संस्थान द्वारा आयोजित की गई है। गन्ना फिजी में खेती की जाने वाली सबसे महत्वपूर्ण फसलों में से एक है और एक सदी से भी अधिक समय से इसने देश की अर्थव्यवस्था के विकास को आकार दिया है। हालाँकि, पिछले 20 वर्षों से, गन्ना और चीनी दोनों के उत्पादन में लगातार लगभग 50त्न की गिरावट आई है। निदेशक प्रोफेसर नरेंद्र मोहन ने कहा कि खेती, कटाई और परिवहन लागत के साथ-साथ कम उत्पादकता और भूमि पट्टों के नवीनीकरण न होने के कारण गन्ने के उत्पादन में कमी के कारण फिजी मे वर्तमान स्थिति पैदा हुई है।

हम उन्हें चीनी उद्योग को टिकाऊ बनाने के लिए भारतीय किसानों, संस्थानों और उद्योग द्वारा किए गए कार्यों को दिखाने जा रहे हैं। हम उन्हें विभिन्न प्रकार के विकास, बीज उपचार, रोपण तकनीक, सिंचाई प्रथाओं, रोग और कीट प्रबंधन, कृषि मशीनीकरण पर सैद्धांतिक और व्यावहारिक जानकारी प्रदान करने जा रहे हैं और महत्वपूर्ण रूप से उचित परिपक्वता पर गन्ने की कटाई और पेराई देरी में कटौती को कम करने के बारे में सूचना प्रौद्योगिकी के उपयोग पर जानकारी प्रदान करेंगे। निदेशक ने बताया कि बेहतर गुणवत्ता वाली चीनी का उत्पादन करने के लिए प्रसंस्करण में नवीनतम तकनीक और मूल्य वर्धित उत्पाद बनाने के लिए सह-उत्पादों के उपयोग के बारे में भी उन्हें जानकारी दी जाएगी।

औपचारिक स्वागत और निदेशक प्रोफेसर मोहन के संबोधन के बाद, प्रोफेसर डी. स्वैन, प्रोफेसर शुगर इंजीनियरिंग द्वारा संस्थान की गतिविधियों के बारे में प्रस्तुति दी गई। डॉ. सीमा परोहा, प्रोफेसर बायोकैमिस्ट्री और डॉ. अशोक कुमार, सहायक प्रोफेसर, कृषि रसायन विज्ञान ने क्रमशः चीनी-इथेनॉल परिदृश्य और गन्ने की खेती के विभिन्न पहलुओं पर इंटरैक्टिव सत्र आयोजित किए।

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान का एक्सपोजर दौरा पूरा करने के बाद, संस्थान के विशेषज्ञ प्रतिनिधिमंडल के साथ विभिन्न वाणिज्यिक चीनी कारखानों, नई गन्ना किस्मों के विकास में शामिल संस्थानों, मशीनरी निर्माताओं का दौरा करेंगे। प्रतिनिधिमंडल सिंचाई के पानी, उर्वरकों और कीटनाशकों के न्यूनतम इनपुट के साथ फसल की उपज में सुधार के लिए किए गए उपायों के संबंध में जमीनी हकीकत जानने के लिए भारतीय प्रगतिशील किसानों के साथ बातचीत भी करेगा।

दैनिक तस्वीर आजकल
एहसास सच का
कानपुर मंगलवार, 27 फरवरी 2024
कान

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान प्रतिनिधिमंडल पहुंचा कानपुर

दैनिक तस्वीर आजकल

कानपुर। फिजी से गन्ना उत्पादक परिषद के महाप्रबंधक (संचालन) सुनील चौधरी के नेतृत्व में प्रगतिशील गन्ना किसानों का 18 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल भारत में गन्ने के उत्पादन के लिए अपनाई जाने वाली नवीनतम कुशल तकनीकों को देखने और चर्चा करने के लिए अपने दो सप्ताह के अध्ययन दौरे पर राष्ट्रीय शर्करा संस्थान कानपुर पहुंचा खेती और चीनी उत्पादन यानी खेत से कारखाने तक उत्पादकता में सुधार के लिए उठाए गए नवीन उपायों के संबंध में संस्थान के फार्म, प्रायोगिक चीनी कारखाने और इथेनॉल संयंत्र के संचालन को देखने के लिए टीम कुछ दिनों के लिए राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर में रुकेगी यह यात्रा

भारत सरकार के विदेश मंत्रालय के माध्यम से गन्ना उत्पादक परिषद, फिजी के अनुरोध पर संस्थान द्वारा आयोजित की गई है गन्ना फिजी में खेती की जाने वाली सबसे महत्वपूर्ण फसलों में से एक है और एक सदी से भी अधिक समय से इसने देश की अर्थव्यवस्था के विकास को आकार दिया है हालांकि, पिछले 20 वर्षों से गन्ना और चीनी दोनों के उत्पादन में लगातार लगभग 508 की गिरावट आई है निदेशक प्रोफेसर नरेंद्र मोहन ने कहा कि खेती, कटाई और परिवहन लागत के साथ-साथ कम उत्पादकता और भूमि पट्टों के नवीनीकरण न होने के कारण गन्ने के उत्पादन में कमी के कारण फिजी में वर्तमान स्थिति पैदा हुई है हम उन्हें चीनी उद्योग को टिकाऊ बनाने के लिए भारतीय किसानों, संस्थानों और उद्योग द्वारा किए गए कार्यों को दिखाने जा रहे हैं हम उन्हें विभिन्न प्रकार के विकास, बीज उपचार, रोपण तकनीक, सिंचाई प्रथाओं, रोग और कीट प्रबंधन, कृषि मशीनीकरण पर सैद्धांतिक और व्यावहारिक जानकारी प्रदान करने जा रहे हैं और महत्वपूर्ण रूप से उचित परिपक्वता पर गन्ने की कटाई और पेराई देरी में कटौती को कम करने के बारे में सूचना प्रौद्योगिकी के उपयोग पर जानकारी प्रदान करेंगे निदेशक ने बताया कि बेहतर गुणवत्ता वाली चीनी का उत्पादन करने के लिए प्रसंस्करण में नवीनतम तकनीक और मूल्य वर्धित उत्पाद बनाने के लिए सह-उत्पादों के उपयोग के बारे में भी उन्हें जानकारी दी जाएगी औपचारिक स्वागत और निदेशक प्रोफेसर मोहन के संबोधन के बाद, प्रोफेसर डी. स्वैन, प्रोफेसर शुगर इंजीनियरिंग द्वारा संस्थान की गतिविधियों के बारे में प्रस्तुति दी गई डॉ. सीमा परोहा, प्रोफेसर बायोकेमिस्ट्री और डॉ. अशोक कुमार, सहायक प्रोफेसर, कृषि रसायन विज्ञान ने क्रमशः चीनी- इथेनॉल परिदृश्य और गन्ने की खेती के विभिन्न पहलुओं पर इंटरैक्टिव सत्र आयोजित किए राष्ट्रीय शर्करा संस्थान का एक्सपोजर दौरा पूरा करने के बाद, संस्थान के विशेषज्ञ प्रतिनिधिमंडल के साथ विभिन्न वाणिज्यिक चीनी कारखानों, नई गन्ना किस्मों के विकास में शामिल संस्थानों, मशीनरी निर्माताओं का दौरा करेंगे प्रतिनिधि मंडल सिंचाई के पानी, उर्वरकों और कीटनाशकों के न्यूनतम इनपुट के साथ फसल की उपज में सुधार के लिए किए गए उपायों के संबंध में जमीनी हकीकत जानने के लिए भारतीय प्रगतिशील किसानों के साथ भी बातचीत करेगा।

18 सदस्यीय फिजी टीम आई एन,एस,आई

15 दिन तक कार्यशाला में करेगी प्रतिभाग

संवाददाता/अरुण जोशी

कानपुर। फिजी से गन्ना उत्पादक परिषद के महाप्रबंधक (संचालन) सुनील चौधरी के नेतृत्व में प्रगतिशील गन्ना किसानों का 18 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल भारत में गन्ने के उत्पादन के लिए अपनाई जाने वाली नवीनतम कुशल तकनीकों को देखने और चर्चा करने के लिए अपने दो सप्ताह के अध्ययन दौरे पर राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, पहुंचा। खेती और चीनी उत्पादन यानी खेत से कारखाने तक उत्पादकता में सुधार के लिए उठाए गए नवीन उपायों के संबंध में संस्थान के फार्म, प्रायोगिक चीनी कारखाने और इथेनॉल संयंत्र के संचालन को देखने के लिए टीम कुछ दिनों के लिए राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, में रुकेगी। यह यात्रा भारत सरकार के विदेश मंत्रालय के माध्यम से गन्ना उत्पादक परिषद, फिजी के अनुरोध पर संस्थान द्वारा आयोजित की गई है। गन्ना फिजी में खेती की जाने वाली सबसे महत्वपूर्ण फसलों में से एक है और एक सदी से भी अधिक समय से इसने देश की अर्थव्यवस्था के विकास को आकार दिया है। हालाँकि, पिछले 20 वर्षों से, गन्ना और चीनी दोनों के उत्पादन में लगातार लगभग 50न की गिरावट आई है। निदेशक प्रोफेसर नरेंद्र मोहन ने कहा कि खेती, कटाई और परिवहन लागत के साथ-साथ कम उत्पादकता और भूमि पट्टों के नवीनीकरण न होने के कारण गन्ने के उत्पादन में कमी के कारण फिजी मे वर्तमान स्थिति

पैदा हुई है औपचारिक स्वागत और निदेशक प्रोफेसर मोहन के संबोधन के बाद, प्रोफेसर डी. स्वैन, प्रोफेसर शुगर इंजीनियरिंग द्वारा संस्थान की गतिविधियों के बारे में प्रस्तुति दी गई। डॉ. सीमा परोहा, प्रोफेसर बायोकैमिस्ट्री और डॉ. अशोक कुमार, सहायक प्रोफेसर, कृषि रसायन विज्ञान ने क्रमशः चीनी- इथेनॉल परिदृश्य और गन्ने की खेती के विभिन्न पहलुओं पर इंटरैक्टिव सत्र आयोजित किए। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान का एक्सपोजर दौरा पूरा करने के बाद, संस्थान के विशेषज्ञ प्रतिनिधिमंडल के साथ विभिन्न वाणिज्यिक चीनी कारखानों, नई गन्ना किस्मों के विकास में शामिल संस्थानों, मशीनरी निर्माताओं का दौरा करेंगे। प्रतिनिधिमंडल सिंचाई के पानी, उर्वरकों और कीटनाशकों के न्यूनतम इनपुट के साथ फसल की उपज में सुधार के लिए किए गए उपायों के संबंध में जमीनी हकीकत जानने के लिए भारतीय प्रगतिशील किसानों के साथ भी बातचीत करेगा।

गन्ना किसानों का प्रतिनिधि मंडल अध्ययन के लिए पहुंचा शर्करा संस्थान

समदर्शी न्यूज ब्यूरो

कानपुर। फिजी से गन्ना उत्पादक परिषद के महाप्रबंधक (संचालन) सुनील चौधरी के नेतृत्व में प्रगतिशील गन्ना किसानों का 18 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल भारत में गन्ने के उत्पादन के लिए अपनाई जाने वाली नवीनतम

कुशल तकनीकों को देखने और चर्चा करने के लिए अपने दो सप्ताह के अध्ययन दौरे पर राष्ट्रीय शर्करा संस्थान कानपुर पहुंचा खेती और चीनी उत्पादन यानी खेत से कारखाने तक उत्पादकता में सुधार के लिए उठाए गए नवीन उपायों के संबंध में संस्थान के फार्म, प्रायोगिक चीनी कारखाने और इथेनॉल संयंत्र के संचालन को देखने के लिए टीम कुछ दिनों के लिए राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर में रुकेगी यह यात्रा भारत सरकार के विदेश मंत्रालय के माध्यम से गन्ना उत्पादक परिषद, फिजी के अनुरोध पर संस्थान द्वारा आयोजित की गई है गन्ना फिजी में खेती की जाने वाली सबसे महत्वपूर्ण फसलों में से एक है और एक सदी से भी अधिक समय से इसने देश की अर्थव्यवस्था के विकास को आकार दिया है हालांकि, पिछले 20 वर्षों से गन्ना और चीनी दोनों के उत्पादन में लगातार लगभग 50% की गिरावट आई है निदेशक प्रोफेसर नरेंद्र मोहन ने कहा कि खेती, कटाई और परिवहन लागत के साथ-साथ कम उत्पादकता और भूमि पट्टों के नवीनीकरण न होने के कारण गन्ने के उत्पादन में कमी के कारण फिजी में वर्तमान स्थिति पैदा हुई है हम उन्हें चीनी उद्योग को टिकाऊ बनाने के लिए भारतीय किसानों, संस्थानों और उद्योग द्वारा किए गए कार्यों को दिखाने जा रहे हैं हम उन्हें विभिन्न प्रकार के विकास, बीज उपचार, रोपण तकनीक, सिंचाई प्रणाली, रोग और कीट प्रबंधन, कृषि मशीनीकरण पर सैद्धांतिक और व्यावहारिक जानकारी प्रदान करने जा रहे हैं और महत्वपूर्ण रूप से उचित परिपक्वता पर गन्ने की कटाई और पेराई देरी में कटौती को कम करने के बारे में सूचना प्रौद्योगिकी के उपयोग पर जानकारी प्रदान करेंगे निदेशक ने बताया कि बेहतर गुणवत्ता वाली चीनी का उत्पादन करने के लिए प्रसंस्करण में नवीनतम तकनीक और मूल्य वर्धित उत्पाद बनाने के लिए सह-उत्पादों के उपयोग के बारे में भी उन्हें जानकारी दी जाएगी औपचारिक स्वागत और निदेशक प्रोफेसर मोहन के संबोधन के बाद, प्रोफेसर डी. स्वैन, प्रोफेसर शुगर इंजीनियरिंग द्वारा संस्थान की गतिविधियों के बारे में प्रस्तुति दी गई।

डॉ. सीमा परोहा, प्रोफेसर बायोकेमिस्ट्री और डॉ. अशोक कुमार, सहायक प्रोफेसर, कृषि रसायन विज्ञान ने क्रमशः चीनी- इथेनॉल परिदृश्य और गन्ने की खेती के विभिन्न पहलुओं पर इंटरैक्टिव सत्र आयोजित किए राष्ट्रीय शर्करा संस्थान का एक्सपोजर दौरा पूरा करने के बाद, संस्थान के विशेषज्ञ प्रतिनिधिमंडल के साथ विभिन्न वाणिज्यिक चीनी कारखानों, नई गन्ना किस्मों के विकास में शामिल संस्थानों, मशीनरी निर्माताओं का दौरा करेंगे प्रतिनिधि मंडल सिंचाई के पानी, उर्वरकों और कीटनाशकों के न्यूनतम इनपुट के साथ फसल की उपज में सुधार के लिए किए गए उपायों के संबंध में जमीनी हकीकत जानने के लिए भारतीय प्रगतिशील किसानों के साथ भी बातचीत करेगा

आवेदन करना पड़ता हो पाए। इसको लेकर एआईटीएच के छात्रों

फिजी के उत्पादक एनएसआई में सीखेंगे गन्ना उत्पादन का हुनर

माई सिटी रिपोर्टर

कानपुर। फिजी के उत्पादक गन्ना उत्पादन का हुनर नेशनल शुगर इंस्टीट्यूट (एनएसआई) से सीखेंगे। इसके साथ ही उत्पादों के विपणन के तौर-तरीकों का सबक वाणिज्यिक चीनी कारखानों में जाकर लेंगे।

सोमवार को फिजी से गन्ना उत्पादक परिषद के महाप्रबंधक (संचालन) सुनील चौधरी की अगुवाई में प्रगतिशील गन्ना किसानों का 18 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल एनएसआई पहुंचा। यह प्रतिनिधिमंडल यहां कुछ दिन रुककर फार्म से फैक्टरी तक प्रक्रिया समझेगा। इसके बाद वाणिज्यिक चीनी कारखानों में जाकर मशीनीकरण को समझेगा। साथ ही गन्ना और इसकी खोई से तैयार होने वाले मूल्यवर्धित उत्पादों के संबंध में भी जानकारी लेगा।

फिजी की गन्ना उत्पादक परिषद के अनुरोध पर विदेश मंत्रालय के माध्यम से इस यात्रा का आयोजन किया गया। गन्ना उत्पादन फिजी की

फिजी प्रतिनिधिमंडल की सदस्य को पुस्तक भेंट करते एनएसआई निदेशक प्रोफेसर नरेंद्र मोहन।

सबसे महत्वपूर्ण फसलों में एक है। पिछले 20 सालों में वहां उत्पादन में 50 फीसदी की गिरावट आई है। एनएसआई के निदेशक प्रोफेसर नरेंद्र मोहन ने बताया कि खेती, कटाई, परिवहन लागत बढ़ने, कम उत्पादकता तथा भूमि पट्टे का नवीनीकरण न होने से फिजी में वर्तमान स्थिति पैदा हुई। उद्योग को टिकाऊ बनाने के लिए फिजी प्रतिनिधिमंडल को भारतीय किसान संस्थानों और उद्योग के कार्यों को दिखाएंगे।

फिजी प्रतिनिधि मंडल टीम ने एन एस आई का दौरा किया

संवाददाता

कानपुर। फिजी से गन्ना उत्पादक परिषद के महाप्रबंधक (संचालन) सुनील चौधरी के नेतृत्व में प्रगतिशील गन्ना किसानों का 18 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल भारत में गन्ने के उत्पादन के लिए अपनाई जाने वाली नवीनतम कुशल तकनीकों को देखने और चर्चा करने के लिए अपने दो सप्ताह के अध्ययन दौरे पर राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर पहुंचा। खेती और चीनी उत्पादन यानी खेत से कारखाने तक उत्पादकता में सुधार के लिए उठाए गए नवीन उपायों के संबंध में संस्थान के फार्म, प्रायोगिक चीनी कारखाने और इथेनॉल संयंत्र के संचालन को देखने के लिए टीम कुछ दिनों के लिए राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर में रुकेगी।यह यात्रा भारत सरकार के विदेश मंत्रालय के माध्यम से गन्ना उत्पादक परिषद, फिजी के अनुरोध पर संस्थान द्वारा आयोजित की गई है। गन्ना फिजी में खेती की जाने वाली सबसे महत्वपूर्ण फसलों में से एक है और एक सदी से भी अधिक समय से इसने देश की अर्थव्यवस्था के विकास को आकार दिया है। हालाँकि, पिछले 20 वर्षों से, गन्ना और चीनी दोनों के उत्पादन में लगातार लगभग 50 प्रतिशत की गिरावट आई है। निदेशक प्रोफेसर नरेंद्र मोहन ने कहा कि खेती, कटाई और परिवहन लागत के साथ-साथ कम उत्पादकता और भूमि पट्टों के नवीनीकरण न होने के कारण गन्ने के उत्पादन में कमी के कारण फिजी में वर्तमान स्थिति पैदा हुई है।हम उन्हें चीनी उद्योग को टिकाऊ बनाने के लिए भारतीय किसानों, संस्थानों और उद्योग द्वारा किए गए कार्यों को दिखाने जा रहे हैं। हम उन्हें विभिन्न प्रकार के विकास, बीज उपचार, रोपण तकनीक, सिंचाई प्रथाओं, रोग और कीट प्रबंधन, कृषि मशीनीकरण पर सैद्धांतिक और व्यावहारिक जानकारी प्रदान करने जा रहे हैं और महत्वपूर्ण रूप से उचित परिपक्वता पर गन्ने की कटाई और पेराई देरी में कटौती को कम करने के बारे में सूचना प्रौद्योगिकी के उपयोग पर जानकारी प्रदान करेंगे। निदेशक ने बताया कि बेहतर गुणवत्ता वाली चीनी का उत्पादन करने के लिए प्रसंस्करण में नवीनतम तकनीक और मूल्य वर्धित उत्पाद बनाने के लिए सह-उत्पादों के उपयोग के बारे में भी उन्हें जानकारी दी जाएगी। औपचारिक स्वागत और निदेशक प्रोफेसर मोहन के संबोधन के बाद, प्रोफेसर डी. स्वैन, प्रोफेसर शुगर इंजीनियरिंग द्वारा संस्थान की गतिविधियों के बारे में प्रस्तुति दी गई। डॉ. सीमा परोहा, प्रोफेसर बायोकैमिस्ट्री और डॉ. अशोक कुमार, सहायक प्रोफेसर, कृषि रसायन विज्ञान ने क्रमशः चीनी-इथेनॉल परिदृश्य और गन्ने की खेती के विभिन्न पहलुओं पर इंटरैक्टिव सत्र आयोजित किए। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान का एक्सपोजर दौरा पूरा करने के बाद, संस्थान के विशेषज्ञ प्रतिनिधिमंडल के साथ विभिन्न वाणिज्यिक चीनी कारखानों, नई गन्ना किस्मों के विकास में शामिल संस्थानों, मशीनरी निर्माताओं का दौरा करेंगे। प्रतिनिधिमंडल सिंचाई के पानी, उर्वरकों और कीटनाशकों के न्यूनतम इनपुट के साथ फसल की उपज में सुधार के लिए किए गए उपायों के संबंध में जमीनी हकीकत जानने के लिए भारतीय प्रगतिशील किसानों के साथ भी बातचीत करेगा।

Digital News

- प्रगतिशील गन्ना किसानो का 18 सदस्यीय प्रतिनिधि मंडल पहुंचा राष्ट्रीय शर्करा स्थान
- राष्ट्रीय शर्करा संस्थान कानपुर में फिजी के गन्ना उत्पादक का 18 सदस्य प्रतिनिधि मंडल कानपुर पहुंचा
- फिजी की 18 सदस्य टीम पहुंची एन,एस,आई